ISSN: 2456–4397 RNI No.UPBIL/2016/68067 Vol-5* Issue-10* January-2021
Anthology : The Research

राष्ट्रीय चेतना के विकास में हिंदी साहित्य की भूमिका

Role of Hindi Literature in The Development of National Consciousness

Paper Submission: 15/01/2021, Date of Acceptance: 25/01/2021, Date of Publication: 26/01/2021

उषा सिन्हा
विभागाध्यक्ष,
स्नातकोत्तर हिंदी विभाग,
संकायाध्यक्ष, मानविकी संकाय
भूपेन्द्र नारायण मंडल
विश्वविद्यालय,
उत्तरी परिसर, मधेपुरा,
बिहार, भारत

सारांश

हिंदी साहित्य राष्ट्रीय चेतना के विकास में अहम् भूमिका निभाता रहा है। वैसे, साहित्य वैदिक काल से ही राष्ट्रं का उन्नयन करता आ रहा है। संसार में ज्ञान के जितने भी अनुशासन हैं, उनमें साहित्य ही एकमात्र मानव–जीवन की प्राथमिक मातृभाषा और परिभाषा है। शेष ज्ञान शाखाएँ एकपक्षीय हैं। साहित्य में ज्ञान संवेदना होती है, जो अन्य किसी ज्ञान शाखा में नहीं होती। यथा–विज्ञान के अंतर्गत जब हम भौतिकी का अध्ययन करते हैं, तो उन पदार्थों में कोई चेतना और संवेदना नहीं होती। परंतु, साहित्य में जब हम प्रेम, श्रद्धा, करूणा, भक्ति, परोपकार, श्रृंगार आदि को पढ़ते हैं, तो वहाँ हमें मानवीय संवेदना के दर्शन होते हैं। कालीदास जब 'मेघदूत' में मेघ का वर्णन करते हैं, तो उससे हमें कोई भौतिक लाभ नहीं होता, किंतु ह्दय आनंद से भर जाता है। साहित्य व्यक्ति को कवि से जोड़ता है और साथ ही शेष सृष्टि से भी। इसीलिए कहा भी गया है– सहितस्य भाव: साहित्यिम।

इस प्रकार साहित्य सामुदायिक विकास में सहायक होता है और सामुदायिक भावना राष्ट्रीय चेतना का अंग है। समाज का राष्ट्र से बहुत गहरा और सीधा संबंध है तथा साहित्य का समाज और राष्ट्र से। वैदिक साहित्य से ही राष्ट्रीयता की भावना के स्रोत विद्यमान रहे हैं। रामायण, महाभारत आदि महाकाव्यों में भी राष्ट्रीय भावना विद्यमान है।

हिंदी साहित्य के इतिहास में तो आदिकाल से लेकर आधुनिक काल तक का विपुल साहित्य राष्ट्रीयता की भावना से ओत–प्रोत हैा यह राष्ट्र की प्रगति का मूलमंत्र है। गुलाम भारत में राष्ट्र –प्रेम का शंखनाद करने वाले हिंदी साहित्यकारों की रचनाओं से हिंदी साहित्य् भरा पड़ा है जिनके प्रभाव से भारतीय जनता स्ववतंत्रता की बलिवेदी पर मर मिटने के लिये तैयार थी और ऐसे ही वीरों के बलिदान से हम स्वतंत्र भारत में सांस ले रहे हैं।

Hindi literature has been playing an important role in the development of national consciousness. By the way, literature has been upgrading the nation since Vedic period. Of all the disciplines of knowledge in the world, literature is the only primary mother tongue and definition of human life. The remaining knowledge branches are unilateral. There is a sense of knowledge in literature, which is not there in any other branch of knowledge. As we study physics under science, there is no consciousness and sensation in those substances. But, when we read love, devotion, compassion, devotion, benevolence, adornment etc. in literature, we have visions of human compassion. When Kalidas describes the cloud in Schmaghdashsh, we have no material benefit from it, but the heart fills with joy. Literature connects the person with the poet and also with the rest of creation. That is why it has been said - Bhavishya Bhavroo Sahityam.

Thus literature helps in community development and community spirit is a part of national consciousness. Society has a very deep and direct relationship with the nation, and literature with society and the nation. Vedic literature itself has its sources of nationalism. The national spirit is also present in epics like Ramayana, Mahabharata etc.

In the history of Hindi literature, the prolific literature from the early to modern period is steeped in the feeling of nationalism, it is the key to the progress of the nation. Hindi literature is replete with the writings of the nation-loving conglomerates in slave India, due to whose influence the Indian public was ready to die on the sacrifice of freedom and with the sacrifice of such heroes we are breathing in independent India. .

More about this source textSource text required for additional translation information

मुख्य शब्दः साहित्य , राष्ट्रीयता, सामुदायिक, मानवीय–संवदेना, देश–प्रेम।
Literature, Nationality, Community, Humanitarianism, Patriotism.

प्रस्तावना

साहित्य वैदिक काल से ही राष्ट्र का उन्नयन करता आ रहा है। संसार में ज्ञान के जितने भी अनुशासन हैं, उनमें साहित्य ही एकमात्र मानव–जीवन की प्राथमिक मातृभाषा और परिभाषा है। शेष ज्ञान शाखाएँ एकपक्षीय हैं। साहित्य में मानवीय संवेदना होती है, जो अन्य किसी ज्ञान शाखा में नहीं होती। यथा–विज्ञान के अंतर्गत जब हम भौतिकी का अध्ययन करते हैं, तो उन पदार्थों में कोई चेतना और संवेदना नहीं होती। परंतु साहित्य में जब हम प्रेम, श्रद्धा, करूणा, भक्ति, परोपकार, श्रृंगार आदि को पढ़ते हैं, तो वहाँ हमें मानवीय संवेदना के दर्शन होते हैं। कालीदास जब 'मेघदूत' में मेघ का वर्णन करते हैं, तो उससे हमें कोई भौतिक लाभ नहीं होता, किंतु हृदय आनंद से भर जाता है। वाल्मीकि जब राम एवं व्यास जी जब कृ ष्ण का वर्णन करते हैं, तो उस वर्णन में एक अलौकिक आनंद और मानवीय संवेदना का स्वरूप मिलने लगता है। संत रविदास जब लिखते हैं– प्रभुजी तुम चंदन हम पानी तो पढ़कर हृदय का प्रत्येक भाग भींग जाता है। अत: साहित्य व्यक्ति को व्यक्ति से जोड़ता है और साथ ही शेष सृष्टि से भी। इसीलिए कहा भी गया है– सहितस्य भाव साहित्यिम। इस प्रकार साहित्यिम सामुदायिक विकास में सहायक होता है और सामुदायिक भावना राष्ट्रीय चेतना का अंग है। समाज का राष्ट्र से बहुत गहरा और सीधा संबंध है। संस्कारारित समाज की अपनी विशिष्ट जीवन शैली होती है, जिसका संबंध सीधा राष्ट्र से होता है, जो सीधे समाज को प्रभावित करती है। राष्ट्रीयता की भावना के स्रोत वैदिक साहित्य से ही विद्यमान रहे हैं– गते गहि स्वजराज्ये[1], आ राष्ट्रै राजन्य:[2,] राष्ट्रेण वर्द्ताम[3],। महाभारत युद्ध में श्रीकृष्ण मोहपाश से जकड़े हुए अर्जुन को गीता–संदेश देते हैं और जिते वा प्राप्य2यसि स्वेर्गम्श कहकर शौर्य से स्वकर्ग का द्वार भी खोलते हैं। इसी प्रकार, 'रामचरितमानस' में भी वीरगति की प्रशंसा मिलती है। 'सनमुख मरन वीर के सोभा', जो राष्ट्रीयता की भावना की उन्नायक रही है।

शोध विधि

विश्लेषणात्मक एवं व्यामख्यात्मक शोध विधि पर आधारित शोध–पत्र है।

अध्ययन का उददेश्य

हिंदी साहित्य राष्ट्रीय भावनाओं से ओतप्रोत रहा है। हमारे हिंदी रचनाकारों ने देशभक्त पर एक रचनाओं के माध्यम से देशवासियों को स्वतंत्रता की बनी वेदी पर मर मिटने का संदेश दिया है। इन्हीं तथ्यों को पाठकों के समक्ष उजागर करना इस आने का उद्देश्य रहा है।

साहित्यावलोकन

हिंदी साहित्य् के इतिहास में आदिकाल के 'रासो' ग्रंथ वीरता की गाथा से भरे पड़े हैं। मातृभूमि की रक्षा के लिए जिन वीरों ने अपनी लड़ाईयाँ लड़ीं, वे पूरे राष्ट्र के प्रतीक बन गये।

भक्तिकाल में तो कबीरदासजी ने निर्गुण निराकार ब्रह्म की उपासना का आदर्श प्रस्तुरत किया और इसी के माध्यम से राष्ट्रीय गरिमा में नवजीवन का संचार कर राष्ट्र को नयी दिशा दी। महान राष्ट्रवादी कवि कबीर ने राम और रहीम को एक सूत्र में पिरोने का कार्य किया। तुलसीदास भी राष्ट्रभक्त संत थे। इन्होंने राम के समन्वयी लोकरंजक स्वरूप को स्थापित कर सांस्कृतिक एकता को शक्ति प्रदान की। सूरदास ने आध्यात्मिक चेतना का संचार कृष्ण की विविधता के माध्यम से किया और समाज को सत्कर्म की प्रेरणा दी।

ईस्ट इंडिया कम्पनी के माध्यम से ब्रिटिश साम्राज्य ने इस देश में पैर पसारा। हमारी स्वतंत्रता पर प्रहार किया। तब इसकी प्रतिक्रिया में हमारी राष्ट्रीय भावना ने एक विस्तृत और सर्वव्यापक स्वरूप ग्रहण करके सन् 1857 का प्रथम स्वाधीनता संग्राम लड़ा। तत्कालीन कवियों ने अपनी रचनाओं के माध्यम से राष्ट्रीय चेतना का स्वर–गान किया–

"हम हैं इसके मालिक हिंदुस्तां हमारा।
यह है आजादी का झंडा, इसे सलाम हमारा।।"

प्रथम स्वदतंत्रता संग्राम से भारतीयों की सुप्त चेतना जाग्रत होने लगी और कवियों तथा शायरों ने अपनी कविताओं, गीतों और गजलों के माध्यम से राष्ट्र को जागरित करने लगे। स्वरदेश की रक्षा के लिये राष्ट्रीय भावों द्वारा राष्ट्रीय चेतना का संचार करने लगे। 1874 ई० में बंकिम चटर्जी के 'वंदेमारतम्' ने जन–जन में नवीन चेतना का संचार कर निर्भय और नि:संकोच भाव का प्रवाह जयघोष के रूप में किया–

"वंदेमातरम्।
सुजलां सुफलां मलयज शीतलाम्"[4]

विश्वकवि रवींद्रनाथ टैगोर ने अँगरेजों के अत्याचार के विरूद्ध उठ खड़े होने की प्रेरणा दी–

"उठो अपने प्राणों के कलुष को आग में जला दो,
जो होना होगा, होगा
उठो कि आज क्षमा करना दुर्बलता है
कहो कि मैं क्षमा नहीं करूँगा,
किसी से नहीं डरूँगा।"[5]

आधुनिक काल में चारों ओर स्वतंत्रता संग्राम की धूम मची थी। राष्ट्र की रक्षा के लिये कवि एवं साहित्यकार राष्ट्रीय भावों द्वारा राष्ट्रीय चेतना का संचार कर रहे थे। उस समय सम्पूर्ण देश के साहित्य की आरती की थाल में राष्ट्रीय भावनाओं की कर्पूर–वर्तिका की ऊष्मा और सुगंध व्याप्त थी। क्रांति, विद्रोह और युद्ध के समय साहित्य अपनी विविध विधाओं के माध्यम से बहुत ही सार्थक और महत्वतपूर्ण भूमिका अदा करता है। क्योंकि स्वभाव से व्यवस्था विरोधी होने के कारण साहित्य जन–मानस को उद्ववेलित कर पाता है, तरूणों को बलिदान के लिए प्रेरित करता है और वेगवान प्रभंजन को परिवर्तन लाने के लिये आमंत्रित करता है। इसलिये

स्वतंत्रता आंदोलन के दौर में हिंदी साहित्य ने उल्लेखनीय भूमिका अदा की। हमारे क्रांतिकारी भाईयों की जुबान पर देश–प्रेम का राम प्रसाद बिस्मिल का यह गीत सजने लगा–

"सरफरोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है।
देखना है जोर कितना बाजुए कातिल में है।।"[6]

उस समय हिंदी के कवियों में भारतेन्दु हरिचन्द्र ने 'भारत दुर्दशा' का चित्रांकन कर समाज को जागरित करने का प्रयास किया–

" रोवहु सब मिलि कै आवहु भारत भाई।
हा! हा! भारत दुर्दशा न देखी जाई।
सबके पहिले जेहि ईश्वर धन बल दीनो।
सबके पहिले जेहि सभ्य विधाता कीनो।।
सबके पहिले जो रूप रंग रस भीनो।
सबके पहिले विद्याफल जिन गहि लीनो।।
अब सबके पीछे सोई परत लखाई।
हा! हा! भारत दुर्दशा न देखी जाई।।"[7]

इसी प्रकार, प्रेमधन की 'अरूणोदय देश दशा', राधाकृष्ण की 'भारत की बारहमासा' के साथ राजनीतिक–चेतना की धार तेज हुई। द्विवेदी युग में कविवर नाथूराम शर्मा शंकर ने 'शंकर सरोज', 'शंकर सर्वस्व' के अन्तार्गत अपने बलिदानी गीत से राष्ट्रींय चेतना को प्रेरणा प्रदान करते हुए देशवासियों को स्वतंत्रता प्राप्ति के लिये क्रांति एवं आत्मोत्सर्ग की प्रेरणा दी–

"देशभक्त् वीरों मरने से नेक नहीं डरना होगा,
प्राणों का बलिदान देश की बेदी पर करना होगा।"[8]

उस समय मैथिलीशरण गुप्त, माखनलाल चतुर्वेदी, बालकृष्ण शर्मा 'नवीन', सुभद्रा कुमारी चौहान, रामधारी सिंह दिनकर आदि कवि देश भक्ति और राष्ट्रीयता की भावना से सम्पूर्ण देश को झकझोर रहे थे। गुप्त जी अपनी 'मातृभूमि' शीर्षक कविता में मात्भूमि–प्रेम को जाग्रत करते हैं–

"नीलांबर परिधान हरित तट पर सुंदर है,
सूर्य–चन्द्रि युग–मुकुट, मेखला रत्नाआकर है।
नदियाँ प्रेम प्रवाह, फूल तारे मंडन हैं,
बंदीजन खगवृन्द्, शेष–फन सिंहासन है।
करते अभिषेक पयोद हैं, बलिहारी इस वेष की।
हे मातृभूमि! तू सत्य ही, सगुण मूत्ति सर्वेश की।।[9]

गुप्तत जी रचना 'भारत–भारती' पढ़कर सैकड़ों नौजवानों में राष्ट्रीय–चेतना का संचार हुआ और वे स्वतंत्रता आंदोलन से जुड़े–

"हम मौन थे क्यां हो गये
और क्या होंगे अभी
आओ विचारें बैठकर
ये समस्यांएँ सभी।"[10]

छायावादी कवियों ने राष्ट्रीयता के रागात्मक स्वरूप को ही प्रमुखता दी और उसी की परिधि में अतीत के सुदूर एवं प्रेरणादायी राष्ट्रवादी मधुर गीतों एवं कविताओं की रचना की। निराला की 'वर दे वीणा वादिनी', 'जागो फिर एक बार' 'शिवाजी का पत्र', प्रसाद की 'अरूण यह मधुमय देश हमारा' आदि कविताओं में कवियों ने राष्ट्रीयता की भावना की प्रशस्त अभिव्यक्ति दी है। जयशंकर प्रसाद 'अरूण यह मधुमय देश हमारा' शीर्षक कविता में लिखते हैं–

"अरूण यह मधुमय देश हमारा।
जहाँ पहुँच अनजान क्षीतिज
को मिलता एक सहारा।
सरल तामरस गर्भ विभा पर,
नाच रही तरूशिखा मनोहर।
छिटका जीवन हरियाली पर,
मंगल कुंकुम सारा।।
लघु सुरधनु से पंख पसारे,
शीतल मलय समीर सहारे।
उड़ते खग जिस ओर मुँह किये,
समझ नीड़ निज प्यारा।।
बरसाती आँखों के बादल,
बनते जहाँ भरे करूणा जल।
लहरें टकरातीं अनन्त की,
पाकर जहाँ किनारा।।
हेम कुम्भ ले उषा सबेरे,
भरती ढुलकाती सुख मेरे।
मंदिर ऊँघते रहते जब,
जगकर रजनी भर तारा।।"[11]

राष्ट्रीय काव्यधारा के प्रणेता माखनलाल चतुर्वेदी ने अपने काव्य 'हिमकिरीटनी', 'हिमतरंगिनी' आदि कृतियों की रस–धारा से राष्ट्रीयता का भाव जागरित किया। इन्होंने भारत को पूर्ण स्वतंत्र कर जनतंत्रात्मक पद्धति की स्थापना का संकल्प किया। इनकी कविता से संघर्ष की प्रबल प्रेरणा मिलती है। 'कैदी और कोकिला' शीर्षक कविता में वे लिखते हैं–

''क्या देख न सकती जंजीरों का गहना।"[12]

जेल की हथकड़ी उनके जीवन को अलंकृत करती है। स्वाधीनता के प्रति समर्पण भाव ने इनके जीवन को राष्ट्रीय साँचे में ढ़ाल दिया। 'पुष्प की अभिलाषा' शीर्षक कविता की पंक्तियाँ भारतीय आत्मा की पहचान कराती है–

"मुझे तोड़ लेना वनमाली,
उस पथ पर तुम देना फेंक,
मातृभूमि पर शीष चढ़ाने
जिस पथ आते वीर अनेक।"[13]

कवयित्री सुभद्रा कुमारी चौहान की 'झाँसी की रानी', 'वीरों का कैसा हो बसंत' आदि कविताओं में राष्ट्रीय भावना की अभिव्याक्ति है। जालियाँवाला बाग में हुए नृशंस हत्या पर करूणा का भाव प्रदर्शित करते हुए 'वीरों का कैसा हो बसंत' शीर्षक कविता में कवयित्री कहती है -

"आओ प्रिय ऋतुराज किन्तु धीरे से आना
यह है शोक स्थान यहाँ मत शोर मचाना,
कोमल बालक मरे यहाँ गोली खाकर,
कलियाँ उनके लिये चढ़ाना थोड़ी–सी लाकर ।"[14]

रामधारी सिंह दिनकर स्वतंत्रता पूर्व के विद्रोही कवि के रूप में स्थापित हुए और स्वतंत्रता के बाद राष्ट्रकवि के रूप में जाने जाते रहे। 'कुरूक्षेत्र' काव्य राष्ट्रीयता से परिपूर्ण है–

"लड़ना उसे पड़ता मगर,
और जीतने में वह देखता है,
सत्यर को रोता हुआ।
वह सत्य है जो रो रहा,
इतिहास के अध्याय में,
विजयी पुष्प के नाम पर
कीचड़ नयन का डालता"[15]

दिनकर 'कलम' से कहते हैं–

"जला अस्थियाँ बारी–बारी
चिटकाई जिनमें चिनगारी
जो चढ़ गये पुण्यवेदी पर
लिये बिना गर्दन का मोल
कलम, आज उनकी जयबोल।"[16]

बालकृष्ण, शर्मा 'नवीन' ने भी अपनी कविताओं के माध्यम से राष्ट्रीय भाव जागृत किया है। 'विप्लव गान' में कवि लिखते हैं–

"कवि कुछ ऐसी तान सुनाओ,
जिससे उथल–पुथल मच जाए,
एक हिलोर इधर से आए,
एक हिलोर उधर से आए,
प्राणों के लाले पड़ जाए,
त्राहि–त्राहि रव नभ में छाए।"[17]

गोपाल प्रसाद व्यास 'खूनी हस्ताक्षर' शीर्षक कविता में देश के प्रति काम आ सकने वाले खून को ही असली खून मानते हैं–

"वह खून कहो किस मतलब का,
जिसमें उबाल का नाम नहीं,
वह खून कहो किस मतलब का,
आ सके देश के नाम नहीं,
वह खून कहो किस मतलब का,
जिसमें जीवन न रवानी है,
जो परवश होकर बहता है,
वह खून नहीं पानी है।"[18]

सोहनलाल द्विवेदी के काव्य –संग्रह में स्वतंत्रता के आह्वान एवं देश प्रेम साधना के बीच आशा और निराशा के स्वर का जो प्रस्फुटन हुआ, उसका अविरल प्रवाह बहा। इनकी कविता में मातृभूमि के प्रति करूणा का भाव इस प्रकार अभिव्यक्त, हुआ है–

"कब तक क्रूर प्रहार सहोगे
कब तक अत्यातचार सहोगे
कब तक हाहाकार सहोगे
उठो राष्ट्र के हे अभिमानी
सावधान मेरे सेनानी।"[19]

सियाराम शरण गुप्त की 'बापू' शीर्षक कविता में गाँधीवाद के प्रति अटूट आस्था एवं अहिंसा, सत्य करूणा, विश्व–बंधुत्व, शांति आदि मूल्यों का गहरा प्रभाव है। गद्य–साहित्य में भी प्रेमचन्द, जैनेन्द्र, अज्ञेय, रामवृक्ष बेनीपुरी, राहुल सांकृत्यायन, राजा राधिका रमण प्रसाद सिंह, शिवपूजन सहाय आदि ने देश प्रेम, राष्ट्रीयता और आत्मोसर्ग की भावना से ओत–प्रोत अनेक रचनाएँ प्रस्तुत कीं।

परिणाम और चर्चा

रामनरेश त्रिपाठी' गया प्रसाद शुक्ल, श्रीधर पाठक आदि ने गीतों, गजलों, लेखों, संपादकीय आदि के माध्यम से जन–जन तक व्यक्ति के अंदर राष्ट्रीयता का संचार किया। अर्थात् राष्ट्रीय चेतना की सुप्त धारा को नयी दिशा मिली और जन–जागरण को नयी चेतना और जागृति।

निष्कर्ष

इस प्रकार, हिंदी साहित्य के अनेक साहित्यकारों ने राष्ट्रीयता की भावभूमि पर अपनी कृतियाँ रचकर नवजागरण का संदेश दिया। कहा जाता है कि राष्ट्रीय भावना राष्ट्र की प्रगति का मूलमंत्र है। अत: राष्ट्रीय चेतना से सम्पन्न साहित्य के प्रभाव से तत्कालीन जनमानस तो प्रभावित हुआ ही, जिसके परिणामस्वरूप भारतीय जनता स्वतंत्रता की बलिबेदी पर मर–मिटने के लिये तैयार बैठी थी और ऐसे ही वीरों के बलिदान से आज हम स्वतंत्र भारत में सांस ले रहे हैं। राष्ट्रीयता का भाव मानव का प्रथम पायदान है। कवियों के काव्य–रस की आहूति से राष्ट्रीय कविता के ओजस्वी स्वरों की गूँज के द्वारा देश–प्रेम की भावना मजबूत हुई। राष्ट्रीय चेतना को शक्ति प्रदान करने में हिंदी साहित्य की भूमिका सराहनीय रही है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. *'ऋग्वेद' दृ 5,5,6*
2. *'यजुर्वेद' 28/22*
3. *'अर्थवेद'5, 1, 7*
4. *'वंदे मातरम्'– बंकिम चटर्जी*
5. *रवीद्रंनाथ टैगोर*
6. *बिस्मिल अजीमाबादी*
7. *'भारत दुर्दशा'– भारतेन्दु हरिश्च न्द्रत*
8. *'बलिदान गान' शंकर*
9. *'मातृभूमि'– मैथिलीशरण गुप्त*
10. *'भारत भारती'– मैथिलीशरण गुप्त*
11. *'अरूण यह मधुमय देश हमारा'– जय शंकर प्रसाद*
12. *'कैदी और कोकिला'– माखनलाल चतुर्वेदी*
13. *'पुष्प की अभिलाषा'– माखनलाल चतुर्वेदी*
14. *'वीरों का कैसा हो वसंत'– सुभद्रा कुमारी चौहान*
15. *'कुरूक्षेत्र'– रामधारी सिंह दिनकर*
16. *'कलम आज उनकी जय बोल'– रामधारी सिंह दिनकर*
17. *'विप्लजव गान' – बालकृष्ण शर्मा 'नवीन'*
18. *'खूनी हस्ताक्षर'– गोपाल प्रसाद 'व्यास'*
19. *सोहनलाल द्विवेदी*